ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 12 अंक 3 कुल पृष्ठ-8 10 से 16 अगस्त, 2017 दयानन्दाब्द 193 सृष्टि सम्वत् 1960853118 सम्वत् 2074 भा. कृ.-03

जन्माष्टमी के अवसर पर आर्य समाज को आर्यजन सक्रिय एवं सशक्त संगठन बनाने का संकल्प लें

– स्वामी आर्यवेश

देखो! श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है, जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा।

– महर्षि दयानन्द सरस्वती

योगीराज श्री कृष्ण युग निर्माता थे। श्रीकृष्ण का विराट एवं वन्दनीय स्वरूप महाभारत के अनेक प्रसंगों में रेखांकित हुआ है। वे वेद वेदांगों के मर्मज्ञ तो थे ही, दान, दक्षता, शौर्य, लज्जा, कीर्ति, बुद्धि, विनय, श्री, धृति, तुष्टि और पुष्टि आदि सद्गुणों की खान थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में लिखा है "देखो श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है उनका गुण कर्म स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृष्य है जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा। श्री कृष्ण अपने समय के एक युग पुरुष थे जिन्होंने अधर्म एवं अन्याय के खिलाफ सदैव संघर्ष किया। वे ज्ञान कर्म एवं उपासना की त्रिवेणी थे। देश की सभ्यता और संस्कृति को बचाने में राम और कृष्ण के बाद यदि किसी ने योगदान किया है तो वह स्वामी दयानन्द और आर्य समाज ने किया है आर्य समाज श्री कृष्ण के गुणों को चरितार्थ करने का संकल्प लेता है।

स्वामी दयानन्द जी ने समाज में फैले अन्धविश्वास, पाखण्ड, अन्याय, अविद्या साम्प्रदायिकता, अस्पृष्यता जैसी भयंकर सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध संघर्ष करने वाली संस्था के रूप में आर्य समाज की स्थापना की थी और आर्य समाज के संन्यासियों, विद्वानों और कार्यकर्ताओं ने प्रारम्भिक काल में समाज में फैली बुराइयों के विरुद्ध संघर्ष किया जिसके फलस्वरूप आर्य समाज सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध एक सशक्त आन्दोलन के रूप में अपनी पहचान बनाने में सफल रहा था। यह आर्य समाज के लिए गौरव की बात थी। लेकिन आज देश अनेक गम्भीर समस्याओं से ग्रस्त है भयंकर भ्रष्टाचार, आतंकवाद, अव्यवस्था, गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, मंहगाई एवं शराबखोरी जैसी समस्याएं विकराल रूप धारण कर चुकी है। गोहत्या, कन्या भ्रूण हत्या, दहेज, अश्लीलता आदि देश की ऐसी समस्याएं हैं जिससे हमारी पूरी संस्कृति ही नष्ट हो रही है। इन विषम परिस्थितियों में आर्य समाज चुप नहीं बैठ सकता। सिद्धान्तों की रक्षा व अनुपालन, संगठन की मजबूती व सक्रियता, सामाजिक मुद्दों को लेकर नई सोच व संघर्ष और अपनी ताकत व प्रभाव बढ़ाने के लिए सम्प्रेषण अर्थात् जन सम्पर्क अभियान बनाये रखना संगठन व विचारधारा को बनाये रखने के लिए अत्यन्त आवश्यक है और इन सबके लिए हम प्राण पण से जुटे हुए हैं। आज श्री कृष्ण जी के जन्म दिवस पर हम हृदय से चिन्तन करें और महर्षि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाने के लिए एक जुट होकर कार्य करें। आज आवश्यकता अपने अन्तर्जगत के परिशोधन की है यदि यह कार्य ईमानदारी से हो जाये तो बाहर की कोई समस्या रहेगी ही नहीं। अतः आर्य समाज की प्रगति और उसके मन्तव्यों और सिद्धान्तों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए पूरी ईमानदारी और निष्ठा से आप सब हमारा सहयोग करें और आर्य समाज को पुराना गौरव प्रदान करवाने में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें।

सार्वदेशिक सभा द्वारा विभिन्न मुद्दों को प्रभावी ढंग से उठाया जा रहा है। साम्प्रदायिकता, जातिवाद, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, पाखण्ड, शोषण के विरुद्ध जन-जागरण का कार्य पूरी शक्ति के साथ किया जा रहा है। हम सबको आर्य समाज को गति देनी है और इसके लिए आप सबका सहयोग अपेक्षित है। योगीराज श्री कृष्ण जी के जन्म दिवस पर आर्य समाज को उन्नत करने का संकल्प लें।

प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली-2

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

इष्टापूर्त कर्म है यज्ञ

– आचार्य महावीर सिंह, दयानन्द मठ चम्बा

हमारी भारतीय संस्कृति यज्ञों की संस्कृति है। भारतीय संस्कृति ही क्यों सम्पूर्ण विश्व की संस्कृति ही यज्ञीय संस्कृति है। यज्ञ के बिना संसार का अस्तित्व ही नही रहेगा। यज्ञ से यह संसार अस्तित्व में आया। यज्ञ से ही यह चल रहा है और जब यज्ञ की पूर्णाहुति हो जाएगी तो संसार का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। जैसे प्रतीकात्मक अग्निहोत्र रूपी यज्ञ की पूर्णाहुति पर न घृत रहता है, न समिधाएं, न हव्य ही रहता है और न ही अग्नि की लपटें रहती हैं, न ही याजकों की क्रियाएं, प्रतिक्रियाएं ही रहती हैं, और न ही आम लोगों की आवाजाही रहती है। सब ओर शांत व निस्तब्धता का वातावरण होता है। यज्ञ में समर्पित सभी पदार्थ सूक्ष्म रूप में आकाश में व्याप्त हो जाते हैं। यज्ञ में उद्गाताओं द्वारा उच्चरित वेदों की स्वरलहरियां आकाश में समा जाती हैं। ठीक उसी प्रकार पूर्णाहुति के बाद इस संसार रूपी यज्ञ की समाप्ति भी हो जाएगी । दृष्टिगोचर अगोचर रूप इस संसार के सभी पदार्थ उसमें समाहित हो जाएंगें। उस अवस्था को प्राप्त हो जाएंगे जिसे हम प्रलयकाल की अवस्था कहते हैं। संसार के अस्तित्व में आने से पूर्व की उस प्रलयावस्था की झांकी प्रस्तुत करते हुए मनु जी महाराज कहते हैः–

आसीदिदं तमोभूतमप्रज्ञातमलक्षणम्।
अप्रतर्क्यमविज्ञेयं प्रसुप्तमिवसर्बतः।।

अर्थात्– सृष्टि रूपी यज्ञ से पूर्व प्रलय की अवस्था में यह संसार अन्धकार युक्त और लक्षणों से रहित संकेत के अयोग्य तथा तर्क द्वारा और स्वरूप से जानने के अयोग्य सब ओर निन्द्रा की सी अवस्था में था। ऋग्वेद के दसवें मण्डल में स्वयं वेद भगवान जी कहते हैः–

नासदासी न्नो सदासीत्तदानीं
नासीद्रजो नो व्योमापरोयत्।
किमावरीवः कुहकस्य भार्मन्नम्भः।
किमासीद् गहनम् गभीरम्।।
नमश्त्युरासीदमश्तम् न तर्हि।
न रात्र्या अह्न्न आसीत् प्रकेतः।।
आनीदवातं स्वधयातदेकं।
तस्माद् धान्यन्न परः किं चनासः।।
ऋ.10–129–1–2–

अर्थात्– सृष्टि से पूर्व में न सत् था न असत् था यानि न ही यह व्यक्त संसार था न अव्यक्त न दिखाई देने वाला संसार ही था। न रज था न रजोमय लोक था। न अन्तरिक्ष था न ही अन्तरिक्ष से ऊपर व नीचे रहने वाले, द्युलोक व मृत्युलोक आदि लोक लोकान्तर ही थे। न तब मृत्यु थी न ही अमृत था। यानि नित्य रहने वाले काल व्यवहार भी नही थे। न रात थी न दिन था। बस था तो केवल कम्पन से रहित प्रकृति से युक्त व एकमात्र वह महान परमेश्वर चेतना का व्यवहार करता हुआ था। दूसरा कोई उसके समान उससे बड़ा व उस जैसा कोई नही था। अर्थात् नृचक्षस चेतन स्वरूप वह परम परमेश्वर ही थे जो कि सभी कालों में सभी अवस्थाओं में निर्लिप्त भाव से बिना गति किए ही सब ओर व्याप्त होकर रहते हैं। जब उनके मन में सृष्टि निर्माण रूपी यज्ञ का संकल्प उठता है देवता यानि पृथ्वी, जल, तेज वायु, आकाश सूक्ष्म रूप में परमाणु रूप में वर्तमान यह देवों का समुदाय आत्मसमर्पण यानि अपने आप को परमात्मा के संकल्प रूपी यज्ञ में आहूतकर इस संसार रूपी यज्ञ को आरम्भ करते हैं। ऋग्वेद के पुरूष सूक्त में स्पष्ट लिखा हैः–

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः तानि धर्माणि प्रथमान्यासम्।

परमेश्वर के संकल्प पर सर्वहुत यज्ञ करने वाले देवों ने जब सृष्टि रूपी यज्ञ आरम्भ किया तो उसके बाद विराट पुरूष पैदा हुआ, भूमि पैदा हुई, लोक लोकान्तर पैदा हुए। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेदों का प्रादुर्भाव हुआ। अश्व आदि प्राणी हुए।'' देखें पुरूषसूक्त में सृष्टि उत्पति का पूर्ण विवरण।

मेरा लिखने का व कहने का अभिप्राय है कि यज्ञ ही सृष्टि का आधार है। यज्ञीय संस्कृति किसी सम्प्रदाय विशेष की नही अपितु सम्पूर्ण विश्व की संस्कृति है। इसे न मानने वाला अथवा सम्प्रदाय विशेष का बताने वाला। चमकते, दमकते सूर्य को देखते, महसूस करते हुए भी मैं सूर्य को नहीं मानता यह कहने वाले जन–जन के सन्ताप को हरने वाले, शीतलता को प्रवाहित करने वाले स्वच्छ श्वेत किरणों से सम्पूर्ण लोकों को धवन करने वाले चन्द्रमा की शीतल छाया का उपयोग करते हुए भी उसे न मानने वाले के समान है। इसके लिए शास्त्रकार कहते हैः–

सर्वस्यौशधमस्ति भाास्त्र विहितम्।
मूर्खस्य नास्त्यौशधम्।।

अर्थात्– संसार में सबका उपाय है पर मूर्ख का कोई उपाय नही है। यज्ञ सृष्टि का आधार है तो है इसे कोई माने अथवा न माने। इससे क्या फर्क पड़ता है। गीता में श्री कृष्ण भी कहते हैः–

सह यज्ञाः प्रजाश्रृश्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः।
अनेन प्रसविश्यध्वं एशनोऽस्त्विश्ट कामधुक्।।

अर्थात्–सृष्टि के आदि में यज्ञ के द्वारा प्रजाओं का निर्माण करने के बाद प्रजापति ने प्रजाओं को आदेश दिया कि हे मेरे औरषपुत्रो! तुम इस यज्ञ का सहारा लेना, इस यज्ञ को बढ़ाना। आप लोगों के द्वारा वृद्धि को प्राप्त यह यज्ञ तुम्हारे इष्ट कामनाओं को पूर्ण करने वाला होगा। तुम्हारी समस्त मनोकामनाएं इससे ही पूर्ण होंगी। इससे ही तुम्हें अचल सुख सौभाग्य की प्राप्ति होगी। जन्म जन्मान्तरों से जिस की तलाश में यह तुम्हारी आत्मा भटक रही है। उस परम सुख स्वरूप परम तत्व की प्राप्ति भी तुम्हें इसी यज्ञ से होगी। वेद में भी कहा है– **ईजानः स्वर्ग यान्ति।** यानि यज्ञ करने वाले सीधे स्वर्ग को प्राप्त करते हैं। प्रजापति के इस आदेश का अनुपालन मनुष्य समाज जब तक करता रहा तब तक संसार में सब ओर सुख व शान्ति का साम्राज्य था। लोगों के चरित्र अच्छे थे, आचार अच्छा था, व्यवहार अच्छा था, खान–पान अच्छा था, परोपकार , जनकल्याणकी भावना बलवती थी। स्वार्थ का परित्याग कर परमार्थ के लिए लोग जीते थे। दूसरों के लिए मर मिटने का मादा सबमें होता था। समय पर वर्षा होती थी। समय पर माता वसुन्धरा पुष्पित व फलवती होती थी। औषधियां, वनस्पतियां समय पर उगती। जन–जन के सन्ताप को हरती थी। न किसी को किसी से भय था और न ही किसी का डर था।

अभयं मित्राद अभयममित्रात् अभयम् ज्ञाताद अभयं परोक्षात्।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशामम मित्रम् भवन्तु।

अर्थात्– हे प्रभो। हमें मित्रों से भय न हो। शत्रुओं से भी भय न हो। ज्ञात पुरूषों से भय न हो। अज्ञातपुरूषों से भी भय न हो। हे जगदीशवर! सारी दिशाएं और उनमें रहने वाले सभी प्राणी हमारे मित्र बन जाएं। यह वेद की भावना सब ओर चरितार्थ होती थी यज्ञों के माध्यम से। यज्ञोमय जीवनों से, जब सबके कल्याण के लिए भावनाएं संप्रेषित की जाती थी। सबकी भलाई के लिए यत्न किए जाते थे। तो किसी से किसी को भय भी कैसे हो सकता था। याजक पुरूष स्वार्थ का परित्याग कर जब परमार्थ के लिए जीने लगता है तब वह अजातशत्रु बन जाता है। उसका कोई शत्रु होता ही नही। रात्रि उसकी सहचरी बन जाती है। दिन उसका सखा हो जाता है। दिशाएं – उपदिशाएं उसके बन्धु बान्धव बन जाते हैं। द्युलोक, अन्तरिक्ष लोक उसके लिए शान्ति वर्षाने लगते हैं। पृथ्वी उसके सुख का कारण बन जाती है। लोकपाल, दिगपाल उसके लिए सब प्रकार के ऐश्वर्यों को उड़ेलने लगते हैं। राम राज्य की हम कामना करते हैं। उसमें यही तो सब होता था। महाराजा अश्वपति की घोषणा का उल्लेख आज भी अपने प्रवचनों के अन्दर गर्वपूर्वक करते हैं। उन्होंने कहा थाः–

नमेस्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः।
नानिहिताग्नी नाऽविद्वान नः स्वेरी स्वेरिणी कुतः।।

मेरे राज्य के अन्दर सभी लोग याजक हैं। यज्ञ करने वाले हैं। इसलिए न कोई चोर है, न शराबी है, न कोई मूर्ख है और न कोई स्वेच्छाचारी पुरूष है। जब स्वेच्छाचारी पुरूष ही नही है तो स्वेच्छाचारिणी स्त्री कैसे हो सकती है। यज्ञ का आश्रय लेकर राजा प्रजाओं के साथ न्याय करता था। प्रजाएं भी राजा को अपने आय का शतांश धर्मपूर्वक समर्पित करते थे। रोग, शोक, आधि, व्याधि का ताण्डव नृत्य नहीं होता था। क्योंकि यज्ञों के कारण जल शुद्ध होता था, वायु शुद्ध होती थी, शुद्ध जल व वायु से उपार्जित अन्न, कन्दमूल व फल भी पौष्टिक व स्वास्थ्यवर्धक होते थे। दुधारू गौवें होती थीं जिनके कारण घी व दूध की नदियां बहती थी। यह था प्रजापति के आदेश का अनुपालन करने का फल, यह था यज्ञों का प्रभाव। इष्ट अभिष्ट कामनाओं की पूर्ति यज्ञों से हुआ करती थी। हर कोई अपने इष्टापूर्ति हेतु यज्ञों का सहारा लेता था।

पर जब से मनुष्य समाज ने प्रजापति के उपदेश को नजर अन्दाज करना शुरू किया तब से वह नाना प्रकार के आधि व व्याधियों से ग्रसित हो गया। विभिन्न प्रकार के व्यसनों में फंस गया। जिनके कारण घोर कष्टों में घिरा इसका जीवन दूभर हो गया है। चोरी, डकैती, अनाचार, पापाचार, दुराचार का तान्डव नृत्य सब ओर देखने को मिल रहा है। कही पर स्वार्थ में अन्धे लोग धन के लिए मासूमों का अपहरण कर उनकी हत्याएं कर रहे हैं तो कहीं पर कामान्ध नर पिशाच अबलाओं, बालाओं के सतित्व को नष्ट कर रहे हैं। तार–तार कर रहे हैं। नष्ट भ्रष्ट कर रहे हैं। यहां तक कि साल दो साल की बच्चियो के साथ हैवानियत का नंगा नाच कर रहे है। उन्हें भी नही छोड़ रहे है। कही पर तो इतना सब कुछ करने पर भी वे अधम लोग बस नही करते। उन बेबसों की वे हत्या भी कर देते हैं। कहां तो भगवान के द्वारा परमात्मा से प्रार्थना की गयी है कि

अभंय न करत्यन्तरिक्षम् अभयंद्यावा पृथिवी उभेइमे।
अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तराद धरादभयं नो अस्तु।।

हे प्रभो। आप अपनी कृपा से हमारे हृदय मन्दिर को निर्भय बना दो। हमें किसी से कोई भय न हो। अन्तरिक्ष, लोक द्युलोक, पृथ्वी लोक इन सभी को हमारे लिए निर्भय बना दो। इन लोकों में जहां भी विचरण करने का अवसर मिले वहीं हमें निर्भयता का वातावरण मिले। अथवा हमारे मन मस्तिष्क में किसी भी प्रकार का भय न हो वे निर्भय रहे। प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष स्थानों से ऊपर व नीचे के स्थानों से कही से भी कोई भय न हो। उसके विपरीत आज सब ओर हर समय पग–पग पर भय व आशंका का वातावरण है। आज भाई से बहन सुरक्षित नही, बाप से बेटी भयातुर है, रिश्तों में जो भी जितना नजदीक है उतना ही उनसे भय है। जब नजदीकियों से आज का समाज सुरक्षित नहीं तो आम लोगों से उसकी सुरक्षा कैसे सम्भव हो सकती है। दिन दिहाडे राहगीरों को लूटा जा रहा है। भीड़–भाड़ वाले इलाको से भी नराधम, दुकानों, बैंको, घरों में लूटपाट मचाते नहीं डरते। जनता की सुविधा के लिए बैंको द्वारा स्थापित एटीएमों को तोड़ा जा रहा है। जो टूटते नहीं उन्हें उठा लिया जा रहा है। स्वार्थ में अन्धा व्यक्ति भविष्य में इसका क्या परिणाम मिलेगा इसकी परवाह किए बिना घोटाले पर घोटाला किए जा रहा है। वर्तमान में जीता हुआ, चोरी, रिश्वतखोरी से अपने भाग्य को चमकाने में लगा है। लाखों–करोड़ों की धन दौलत इक्टठा करने में लगा हुआ है। साधारण से दिखने वाले चपरासी के घर पर जब छापा डलता है तो करोड़ों की सम्पदा का पर्दाफाश होता है। जो बड़े–बड़े पदों पर बैठे हैं उनके तो कहने ही क्या है। कहां पर तो धर्मशास्त्र चतुर्वर्ग का क्रम दर्शाते हुए कहते हैं– धर्म, अर्थ, काम मोक्ष अर्थात धर्मपूर्वक कमाया गया अर्थ कामनाओं को पूर्ण करने वाला होता है। और जिसकी कामनाएं शेष नहीं रहती उसे मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। उसे संसार में भटकने की जरूरत नहीं होती। इसके विपरीत अर्थ को आगे रखकर सब काम हो रहे हैं। इसीलिए सब ओर अशान्ति व अराजकता का साम्राज्य छाया हुआ है। सुख के लिए महान यत्न करता हुआ भी मनुष्य कष्टकारी दुःखों को प्राप्त कर व्यथित हो रहा है। मनुष्य चाहता तो सुख है पर दुःख मिल रहा है। चाहता तो लाभ है पर हानि हो रही है। मान व सम्मान की चाहना करता है पर अवमानना गले में पड़ रही है। यह सब प्रजापति के उपदेश को, उनके आदेश को अपने से तिरोहित करने का परिणाम है। प्रजापति के द्वारा निर्दिष्ट लक्ष्य को आंखो से ओझल करने का परिणाम है। आओ अगर हम अपनी वान्छित मनोकामनाओं को पूर्ण करना चाहते हैं, जीवन में अभिलषित सुख सौभाग्यों से अपनी झोलियां भरना चाहते हैं, अनुपम शान्ति को प्राप्त करना चाहते हैं तो आओ यज्ञों का आश्रय लें। यज्ञीय संस्कृति को अपनाएं। वेद के **अनुसार द्यौ शान्तिः, अन्तरिक्षं शान्तिः, पृथ्वी शान्तिः, आपः शान्तिः, औषधयः शान्तिः, वनस्पतयः शान्तिः विश्वेदेवाः शान्तिः ब्रह्मशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामाशान्ति एधि।** की

अगले पृष्ठ पर जारी है

दयानन्द मठ चम्बा के वार्षिक उत्सव व दुर्लभ शारद यज्ञ का सन्देश व निमन्त्रण

– आचार्य महावीर सिंह

धर्मप्रेमी सज्जनों ईश्वर की अपार अनुकम्पा से, दिवंगत पूज्य चरणों के निरन्तर प्रवाहित होने वाले आशीर्वादों के फलस्वरुप, और आप सभी हितैशियों के सहयोग व मंगलकामनाओं के कारण ही पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज की साधना स्थली दयानन्द मठ चम्बा अपनी जनकल्याणकारी गतिविधियों को जारी रखे हुए है। गुरुजनों व प्रिय पुत्र के आकस्मिक महा गमन से यहां के कार्यों को धक्का तो लगा, झटका तो लगा, पर यहां के काम रुके नहीं। पूज्य स्वामी जी के समय में इन कार्यो में जिस प्रकार की गतिशीलता थी वह गतिशीलता अब बेशक नहीं, पर चल तो रहे हैं। वह आकर्षण, वह प्रभाव बेशक इन कार्यों का न हो, जो पूज्य स्वामी जी के रहते हुए होता था, पर हमने उन्हें जारी तो रखा हुआ हैं। पूरी निष्ठा व आस्था से, प्राणार्पण से जारी रखा हुआ है। कहां राजा भोज कहां गंगू तेली। स्वामी जी तो स्वामी जी थे पर मेरा निर्माण भी तो उन्होंने ही किया। उन्होंने ही इसे सजाया, संवारा, मिट्टी से माधो बनाया। मेरे जीवन पर उन्हीं का अक्ष है। इसीलिए उनके बाद जो कुछ भी कर पा रहा हूँ, वह सब उन्हीं के आशीर्वाद से कर पा रहा हूँ। आज भी ऐसा लगता है, जैसे उन्हीं के दिशा निर्देश में काम कर रहा हूँ। सूर्य के अस्ताचल को चले जाने पर चन्द्रमा, जो कि सूर्य से ही रोशित है सूर्य के कार्य को आगे बढ़ाता है। संसार को रोशनी देता हैं। बेशक वह रोशनी मन्द ही क्यों न हो प्रकाश तो देता है। मेरा कार्य, मेरा प्रयास भी उसी प्रकार का है।

मकसद हैं मेरा रोशित रहें काम उनके
प्रकाश पुंज न सही करुं यत्न जुगनू बनकर
जीवन है उनका यह तन मन है उनका
निभाऊं फर्ज अपना भक्त हनुमान बनके

पूज्य स्वामी जी को परोपकार के कार्य बहुत प्रिय थे। परोपकाराय सतां विभूतयः उनका भी सारा का सारा जीवन दूसरों के दुखः–दर्दो को मिटाने में ही बीता। उसी प्रकार के कार्य कलापों को जीवन में करते रहें। परोपकार का सबसे बड़ा साधन यज्ञ है। जब से यह ज्ञान उन्हें हुआ, तब से वे यज्ञों के प्रति समर्पित हो गए। बड़े–बड़े यज्ञों का अनुष्ठान उन्होंने किया। विभिन्न प्रकार के यज्ञों को भी करते रहें। उन यज्ञों में भी ऋग्वेद में निर्दिष्ट दुर्लभ शारद यज्ञ उन्हें बहुत प्रिय था। क्योंकि राष्ट्र के स्वाभिमान को जगाने के लिए यह यज्ञ किया जाता है। राष्ट्र के गौरव को बढ़ाने के लिए यह यज्ञ किया जाता है। देश में क्षात्र शक्ति की वृद्धि हो, इसलिए यह यज्ञ किया जाता है। वेद भगवान की– ब्रह्मन् स्वराष्ट्र में हो द्विजब्रह्म तेज धारी क्षत्री महारथी हों अरि दल विनाशकारी––।। इस भावना की पूर्ति के लिए यह यज्ञ किया जाता है। इसलिए स्वामी जी ने इस यज्ञ को प्रतिवर्ष करना शुरु किया। यह यज्ञ उन्हें सबसे प्यारा था। नाना विध विरोधो के बाद भी उन्होंने अपने जीवन काल में इसे जारी रखा। जीवन के अंतिम क्षणों में मेरे बेटे को व मुझे अपने सामने बिठाकर स्वामी जी ने आगे भी इसे जारी रखने का हमसे वचन लिया था। यह बात अलग है कि उसके कुछ ही दिनों के बाद बेटा चला गया। ठीक दो महीने के बाद स्वामी जी भी चले गए। व्यथा व पीड़ा की स्थिति में मैंने पूज्य स्वामी जी को दिए वचन को निभाया । मई में बेटा गया, अगस्त में पूज्य स्वामी जी चलते बने। अक्तूबर महीने में हमने स्वामी जी के अभाव में पहला दुर्लभ शारद यज्ञ किया। स्वामी जी के जाने के बाद दो दुर्लभ शारद यज्ञों को आप सभी के सहयोग से सफल किया। आप लोगों का सहयोग न होता तो कैसे श्रम साध्य, व्यय साध्य इन यज्ञों को कर पाता। आप लोगों का सहारा न होता तो महान आघात व व्यथा से पीड़ित मैं और मेरा परिवार, संस्था के सभीजन कैसे उठ खड़े होकर इन कार्यों को कर पाते।

प्रियजनों कष्टकारी व्यथा से भरे विगत दो वर्षो में संस्था में जो भी हो पाया है उन सबका श्रेय आप लोगों को भी जाता है। हम लोग तो निमित हैं अस्तु आप लोगों के सहयोग व सहारे से उत्साहित हो, इस वर्ष भी 18 सितम्बर से 22 सितम्बर तक मठ के वार्षिक यज्ञ के आयोजन का साहस जुटा पा रहा हूँ और आप लोगों से भी हर प्रकार के सहयोग की अभिलाशा रखता हूँ। साथ ही इस महान यज्ञ में शामिल होने के लिए, आप लोगों को सादर आमंत्रित भी कर रहा हूँ। यह भी तो एक शिष्टाचार है अन्यथा संस्था तो आप लोगों की ही है। सज्जनों 18 सितम्बर 2017 से 20 सितम्बर 2017 तक मठ का वार्षिक उत्सव जिसमें पूज्य स्वामी सवितानन्द जी महाराज (झारखण्ड वाले) के ब्रह्मत्व में किए जाने वाले यज्ञ से देवो का पूजन होगा। पितरो का तर्पण होगा। पवित्र वेद की ऋचाओं का गान किया जाएगा। महामनीशी तपस्वी, चिन्तक, विचारक पूज्य स्वामी आर्यवेश जी महाराज के इन यज्ञों से सम्बन्धित सरल व सारगर्भित उपदेशों की गंगा प्रवाहित होगी। यह दोनों ही तपस्वी संत पूज्य स्वामी जी के बहुत ही आत्मीय व प्रिय पात्र रहें। स्वामी सवितानन्द जी तो उनके शिष्यों में से एक मात्र संन्यासी शिष्य हैं, और दोनों ही महापुरुषों का भरपूर आशीर्वाद मुझे प्राप्त है। इन्हीं के संरक्षण व मार्ग दर्शन में यहां के सब कार्य चल रहें हैं। एक तरह से स्वामी जी के बाद इन्हीं दोनों महा तपस्वी सन्तों ने इस संस्थान को सम्भाल लिया है। सूक्ष्म जगत में दिवंगत पूज्यजनों के व स्थूल जगत में इन दोनों पूज्यजनों के आशीर्वाद व इनकी छत्र–छाया में यह संस्थान गतिशील व सुरक्षित है।

21 सितम्बर 2017 प्रातः साढ़े छः बजे 6:30 से दुर्लभ शारद यज्ञ इन्हीं महापुरुषों के ब्रह्मत्व व सुरक्षा घेरे में आरम्भ हो जाएगा। जो कि भगवती ऊशा देवी के रुप में अपनी लालिमा को बिखेरने वाले सूर्य भगवान की वन्दना कर आगे बढ़ेगा। पलों, मिन्टों, फिर घंटों से गुजरता हुआ यह मध्याह्न को, फिर संध्या बेला में सूर्य देव के अस्ताचल को जाने के बाद शाम को, शाम से रात्री के प्रथम द्वितीय प्रहरों से गुजरता हुआ ब्रह्मबेला में प्रवेश करेगा । पुनः ऊशा काल में अमोघ आशीर्वादों की वर्षा करने वाले देवों ,पितरों, दिव्यात्माओं के साथ पुलकित व हर्षित सूर्य भगवान के दर्शनों के बाद अनवरत चलता हुआ ठीक प्रातः 10 बजे विश्रान्ति को प्राप्त करेगा। 22–9–2017 प्रातः इस यज्ञ की पूर्णाहुति हो जाएगी। इस यज्ञ में ऋग्वेद की ऋचाओं से आहुतियॉ समर्पित की जाएगी। महर्षि दयानन्द आदर्श विद्यालय की छात्र–छात्राएं व स्वामी सुमेधानन्द शिष्य मंड़ल के सदस्य व दयानन्द संस्कृत महाविद्यालय के स्नातक बारी–बारी से ऋचाओं का पाठ करेंगें। मध्य में महागायत्री के गायन के साथ भी आहुतियॉ दी जाएगी। बीच–बीच में 15–15, मिन्टों के लिए दोनों ही सन्यासियों का, आचार्य महावीर सिंह का यज्ञ सम्बन्धित उपदेश तथा श्री संदीप आर्य पानीपत, श्री हरीशमुनी सुन्दरनगर, श्री हेमराज जी अमृतसर, कुमारी डिम्पल व शिष्य मडंली आदर्श विद्यालय, श्रीमति सरस्वती देवी जी, श्रीमति रुकमणी देवी जी, श्री भगवती प्रशाद जी पन्त यह सब भी अपने संगीत की झंकारों से यज्ञ के सुन्दर वातावरण को झंकृत करेगें। अपनी स्वर लहरियों से माहौल को मनमोहक, रोमांचित व भावुक बना देगें । सज्जनों यज्ञ में प्रचुर मात्रा में दी गई घृत सामग्री पुष्टीकारक, मिष्ठान युक्त उत्तम पदार्थो की आहुतियों से अत्यधिक तृप्त देवों के झरते हुए आशीर्वादों में नहाने के लिए अवश्य आप लोग इस यज्ञ में आए। पूरी आस्था व निष्ठा से यज्ञ में भाग लेकर सफल मनोरथ होकर जाएं।

बन्धुओं श्रद्धा से ओतप्रोत होकर जितनी आस्था व निष्ठा से आप लोग यज्ञ वेदी में अपने–अपने भाग को ग्रहण करने के लिए उपस्थित दिव्यात्माओं को देवों व पितरों को हव्य प्रदान करोगे। जिन–जिन कामनाओं व इच्छाओं को लेकर उनके चरणों मे, उनकी छाया में बैठोगे, आपकी दी आहुतियों से परम तृप्ति को प्राप्त वे देव जन द्रवित होकर आप की उन–उन कामनाओं को उन–उन इच्छाओं को पूर्ण कर देगें। यह सुनिश्चित समझो मनु जी महाराज कहते हैः–

येन 2 हिभावेन यद् यद्दानम् प्रयच्छतिं।
तत् तत्तेनेवभावेन प्राप्नोति प्रतिपूजितः।।

अर्थात जिस–2 भाव से जो–जो दान दिया जाता हैं अथवा यज्ञाग्नि में आहुतियां दी जाती हैं। उसी भाव के अनुरुप ससम्मान उसकी कामनाएं, उसकी इच्छाएं पूर्ण होती हैं । यज्ञ का, दान का, फल उसे प्राप्त होता है। मनु जी महाराज फिर कहते हैः–

स्वाध्याये नित्य युक्तः स्याद दैवेचैवेह कर्मणि।
देवकर्माणि युक्तो युक्तो हि विभर्तीदं चराचरम।।

मनुष्य को स्वाध्याय व देवकर्म में यानि अग्नि होत्र, यज्ञ कर्म में नित्य युक्त रहना चाहिए, संलग्न रहना चाहिए। यानि इन कर्मो को करते रहना चाहिए। जो व्यक्ति यज्ञकर्म में लगा होता है वह इस चराचर जगत् को तृप्त करता है, उसका पोषण करता है। वह कैसे मनु जी पुनः कहते हैः–

अग्नौ प्रस्ताहुतिः सम्यग् आदित्यमुपतिश्ठते।
आदित्याज्जायते वशिष्ठः वृष्टेरन्नं ततः प्रज्ञाः।।

अग्नि में डाली गयी आहुति सूर्य को पहुंचती हैं। सूर्य से वृष्टि होती है। वृष्टि से अन्न होता है और अन्न से प्राणी उत्पन्न होते हैं। इसलिए यज्ञ ही संसार का कारण हैं । अतः यज्ञ श्रेष्ट व महान कल्याणकारी कर्म है। और फिर जिस स्थान पर महान तपस्वी सन्तों, ऋषियों और मुनियों ने गहन साधना की हो। परम तप तपा है, बड़े–बड़े यज्ञों के अनुष्ठान किया हो, जिनके कारण वह स्थान तीर्थ बन गया हो, ऐसे स्थानों में जाकर यज्ञानुष्ठानों को करना उनमें भाग लेना सत्वर लाभकारी व महान कल्याणकारी होता है। चम्बा नगरी में दयानन्द मठ की पवित्र धरा पर परम तपस्वी सन्त पूज्य चरणों ने महान तप तपा है। महान साधक पूज्य स्वामी जी ने गहन साधना की है। बहुत बड़े याजक उस यज्ञ पुरुष ने बड़े–बड़े दीर्घ सत्रीय यज्ञों का अनुष्ठान किया हैं। इसलिए यह धरा भी पतित पावनी धरा हो गयी है। यहां का वातावरण पूत व पवित्र कर देने वाला है। इस धरा पर उस तपस्वी यज्ञ पुरुष के द्वारा यज्ञों व सत्संग की पावनी गंगा प्रवाहित की गयी। उसमें नहाने का, उसमें भाग लेने का अपना ही महत्व है। अतः इस यज्ञ में अवश्य आएं, इसमें भाग लें परम कल्याण होगा।

– दयानन्द मठ, चम्बा, हिमाचल प्रदेश

पिछले पृष्ठ का शेष

इष्टापूर्त कर्म है यज्ञ

कामना पूर्ण करना चाहते हैं तो यज्ञ के अलावा यज्ञीय संस्कृति के अलावा और कोई रास्ता नही है। **नान्यपन्था विद्यतेऽनायः** यह वेद की भी मान्यता है। आज संसार प्रदूषित वातावरण से परेशान है। उसके लिए व्यय साध्य अनेकानेक उपाय किए जा रहे हैं पर दूषित पर्यावरण रूपी शैतान की आंत घटने की बजाय बढ़ती जा रही है। जिसके कारण कई नई से नई असाध्य बीमारियों से आज का समाज ग्रसित है। इन सबसे मुक्ति पाने का एक मात्र साधन यज्ञ ही है। यज्ञ का सहारा लें, इन सब समस्याओं का अन्त स्वतः ही हो जाएगा। आज समाज में विभिन्न प्रकार की पूजा पद्धतियां, देवीय व पिशाचीय शक्तियों को सन्तुष्ट करने के लिए विभिन्न प्रकार के तरीके अपनाए जाते हैं। इष्टों व पितरों को तृप्त करने के लिए अनेकानेक व्यय साध्य उपक्रम किए जाते हैं। परोक्ष, अपरोक्ष उन पितरों की तृप्ति का यह यज्ञ सर्वोत्तम उपाय है। जिसको आज का समाज सर्वथा भुला बैठा है। इसीलिए ठोकरें खाने के लिए विवश है। आओ हम लोग जो अपनी संस्कृति में आस्था रखते हैं यज्ञों का सहारा लेकर जहां हम स्वयं इन यज्ञों को करें। इनका प्रचार प्रसार भी करें। लोगों की यज्ञों में आस्था जगे ऐसे उपक्रम करें। सुखकारी व शान्तिदायक, परम कल्याणकारी, इष्ट व कामनाओं की पूर्ति वाले इन यज्ञों को मानव समाज अपनाए। इसके लिए प्रयास करें। दयानन्द मठ चम्बा में पूज्य स्वामी जी महाराज सदा इन्ही प्रयासो में लगे रहे। इसीलिए वृहद्, वृहतर, दीर्घकालिक, दीर्घसत्रीय यज्ञों का आयोजन यहां पर करते रहे हैं। अब आगे इन यज्ञों की श्रृंखला को जारी रखना और आगे बढ़ाना हम सब का कर्तव्य है। इसके लिए संस्था के साथ आप लोग सम्बद्धता बनाए रखें। यहां संचालित यज्ञकार्यों में सोत्साहपूर्वक बढ़–चढ़ कर भाग लें। संस्था के लिए अपनी आहुतियां प्रेषित करते रहें। 5 अप्रैल को प्रिय ऋषि के जन्म दिन को निमित्त बनाकर वृहद् यज्ञ व लंगर का आयोजन करेंगे। 3 से 5 मई को पूज्य चरणों के जन्मदिन को लक्ष्यकर यज्ञ, सत्संग का आयोजन व लंगर को आयोजन करना चाह रहा हूं। पूज्य चरण पुण्यतिथियों को मनाने के पक्षधर नहीं थे। अतः उनके जन्मदिन को निमित्त बनाकर उन्हें सामूहिक रूप से श्रद्धांजली देंगे। उनकी कृतियों को स्मरण करते हुए, उनके व्यक्तित्व के प्रति नतमस्तक होते हुए, उनके श्री चरणों में पुष्पांजलियां अर्पित करेंगे। श्रेष्ठतम यज्ञकर्मों की श्रृंखला जारी रखने के लिए यह बहाने हैं। सत्संग व आपसी मेलमिलाप के लिए यह आयोजन किए जाते हैं। एक सुन्दर माहौल व वातावरण के सृजन हेतु प्राचीन काल से आश्रमों में ऐसे आयोजन किए जाते रहे हैं। जिनके कारण वह स्थान तीर्थ यानि दुःखों, पापों से तारने वाले तथा अनुपम शान्ति व अपार सकून देने वाले बन जाते थे। आज भी उन स्थानों पर शान्ति की बयार बहती है। आओ इस स्थान को भी महान कल्याणकारी तीर्थ हम सब मिलकर बनाएं जिसके लिए पूज्य स्वामी जी ने महान तप तथा सघन साधना की। जिनके अणु परमाणु इसके वायुमण्डल में निरन्तर भ्रमण कर रहे हैं। हम लोगों ने तो उस उपक्रम को जारी रखना है। गीतकार के शब्दों में, **"श्वासों का क्या भरोसा आए या न आए, जो कर्म नित्य करता प्रभु न उसे भुलाए।"** इसीलिए इन शुभ कर्मों में अपनी भागीदारी अवश्य बनाएं। मैं आप लोगों का आवाहन ही कर रहा हूं। शेष कर्म तो आपके हाथ में है। अतः आओ इस इष्ट कल्याणकारी समस्त मंगलकामनाओं को पूरा करने वाले यज्ञ रूपी दिव्य नाव में बैठकर दुष्तर संसार सागर को आसानी से पार कर दिव्य लोकों को प्राप्त करें।

योगेश्वर श्रीकृष्ण का सत्य स्वरूप

– डॉ. महेश विद्यालंकार

आर्य समाज का उदय सत्य के प्रचार–प्रसार और वैदिक धर्म के पुनरुद्धार के लिए हुआ। महापुरुषों के उज्ज्वल प्रेरक चारित्रिक गरिमा की रक्षा का सदा पक्षधर रहा है। उसका नारा था जागते रहो। जागते रहो। स्वयं जागो और दूसरों को जगाओ। आज दुनिया जिस रूप में श्रीकृष्ण को मानती, जानती व समझती है, उस विकृत, कलंकित श्रीकृष्ण के स्वरूप को आर्य समाज नहीं मानता है। आर्य समाज उन्हें योगीराज महापुरुष के रूप में सम्मानित एवं प्रतिष्ठित करता है। वे दिव्य गुणों से युक्त महापुरुष थे। उन्हें अवतारी ईश्वर नहीं मानता है। परमात्मा एक है। अनेक नहीं, वह कण–कण में सर्वत्र विद्यमान है। वह व्यक्ति नहीं शक्ति हैं। वह सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान व सर्वान्तरयामी है। वह जन्म मृत्यु से परे है। गीता में स्वयं श्रीकृष्ण ने कहा है –

ईश्वरः सर्वभूतानां हृददेशेऽर्जुन तिष्ठति।

भारत देश की विशेषता, महत्त्व, आकर्षण एवं सौभाग्य रहा कि इसे ऋषि, मुनि, ज्ञानी, तपस्वी प्रेरक महापुरुषों को विरासत व परम्परा मिली है। दिव्यात्मा, पुण्यात्मा महापुरुषों की लम्बी परम्परा में भगवान मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम और योगीराज श्रीकृष्ण का नाम बड़ी श्रद्धा, सम्मान और पूज्यभाव में लिया जाता है। अधिकांश भक्तजन इनमें दैवीय युक्त पूज्य एवं आराध्य भाव रखते हैं। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व प्रेरक, आकर्षक, लोकोपकारक, बहुआयामी तथा चुम्बकीय था। इसी कारण लाखों हजारों वर्षों के घात–प्रतिघात वात्यायचक्रों विवादों आदि के होते हुए भी वे आज भी जनमानस के हृदयों में पूजित सम्माननीय स्मरणीय व अलौकिक महापुरुष के रूप में प्रतिष्ठित हैं। श्रीकृष्ण पुण्यात्मा, धर्मात्मा, तपस्वी, त्यागी, योगी, वेदज्ञ, निरहंकारी, कूटनीतिज्ञ, लोकोपकारक, खण्ड–खण्ड भारत को अखण्ड देखने के स्वप्नद्रष्टा आदि अनेक गुणों व विशेषणों से विभूषित थे। वे मानवता के रक्षक, पालक और उद्धारक थे। उनके जीवन का उद्देश्य था – परित्राणाय साधूनाम् सत्पुरुषों व धर्मात्माओं की रक्षा हो तथा विनाशाय दुष्कृताम पापी, अपराधी तथा दुष्ट प्रकृति के लोगों का दलन हो और धर्म संस्थापनार्थ सत्य, धर्म, न्याय की सर्वत्र स्थापना होनी चाहिए। इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति में उन्होंने दुःख, कष्ट, विरोध एवं संघर्ष करते हुए सारा जीवन लगा दिया। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर न जाने कितना लिखा, पढ़ा सुना और बोला गया, फिर भी उनके जीवन और कार्यों की वास्तविक प्रामाणिक सत्यस्वरूप जानकारी हमारे से ओझल हो रही है। भगवद पुराणों, लोक साहित्य, कथाओं, रासलीलाओं, कृष्णलीलाओं, सीरियलों पिक्चरों, नाटकों आदि में तमाशा बन रहे हैं। अधिकांश लोग और आज की युवापीढ़ी जो योगेश्वर श्रीकृष्ण का ऐतिहासिक जीवन स्वरूप मान रहे हैं। यह देश धर्म मानवजाति एवं इतिहास के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है।

संसार के इतिहास में श्रीकृष्ण जैसा निराला, विलक्षण, अद्भुत, अद्वितीय विश्वबन्धु महापुरुष न मिलेगा। यदि किसी महापुरुष में वेद, दर्शन, योग, आध्यात्म, इतिहास सहित, संगीत, कला, राजनीति, कूटनीति आदि सभी एकत्र देखने हैं तो वह अकेले देवपुरुष श्रीकृष्ण हैं। सच ये है कि दुनिया के नादान लोगों ने उस योगीराज श्रीकृष्ण का भेद नहीं जाना। जिनका जन्म जेल में हुआ। जन्म से पहले ही मृत्यु के वारन्ट निकल गये। कैसी विचित्र बिडम्बना रही जब जन्म हुआ उस समय उनके पास कोई खुशी मनाने वाला, बधाई देने वाला और मिठाई बांटने वाला नहीं था। ऐसे ही मृत्यु के समय भी उनके पास कोई रोने वाला नहीं था। विमाता यशोदा की गोद में पले, विपरीत परिस्थिति के कारण मामा को मारना पड़ा। राज्य छोड़कर द्वारिका असमय में जाना पड़ा। सत्य, न्याय, धर्म और मानवता की रक्षा के लिए नाना रूप धारण करने पड़े। कई प्रकार की भूमिकाएँ निभाई। कई बार अपमान, विरोध, संघर्ष का जहर पीना पड़ा। सम्पूर्ण जीवन कष्ट, संघर्ष, विवादों, मुसीबतों का अजायबघर रहा। ऐसे विरोधाभास में रहते जीते जीवन में कभी निराश, हताश, उदास एवं दुःखी नजर नहीं आए यही उनके जीवन की समरसता एवं महापुरुषत्व है। उनके जीवन से ऐसी शिक्षा एवं प्रेरणाएँ लेनी चाहिए। महाभारत में अनेक विशेषताओं से युक्त अनेक महापुरुष हुए मगर सभी का जन्मदिन नहीं मनाया जाता है। हजारों वर्षों के बाद बिना सूचना पत्रक, विज्ञापन आदि के श्रीकृष्ण का जन्मदिन सबको याद हैं। बड़ी धूमधाम के साथ सजावट बनावट के साथ पूज्य भावना से जन्मोत्सव मनाया जाता है। जो महापुरुष संसार, मानवता, सत्य, धर्म, न्याय एवं सर्वे भवन्तु सुखिनः के लिए जीता और मरता है उसका जन्मोत्सव सभी जन श्रद्धा भक्ति व सम्मान से मनाते हैं। तभी महाभारतकार व्यास को ससम्मान कहना पड़ा – **कृष्णं वन्दे जगत् गुरुम्।** पूरे महाभारत में सर्वाधिक पूजनीय, अग्रणी, वन्दनीय है तो श्रीकृष्ण को माना गया है। श्रीकृष्ण का असली स्वरूप और चरित्र महाभारत में ही मिलता है। सम्पूर्ण महाभारत में तटस्थ रहते हुए भी सत्य न्याय, धर्म के लिए अहं भूमिका निभाते हैं। वहां वे राष्ट्रनायक के रूप में दिखाई देते हैं। तभी द्रोणाचार्य को कहना पड़ा –

यतो धर्मस्ततः कृष्णः यतः कृष्णस्ततो जयः।

जहां धर्म है वहां श्रीकृष्ण हैं और जहां श्रीकृष्ण हैं वहां निश्चय विजय होगी। महाभारत में श्रीकृष्ण ने अपनी भूमिका बड़ी कुशलता, निपुणता, कूटनीति एवं सक्रियता से निभाई। संसार उनके कर्म कौशल के आगे नतमस्तक है।

अपने इतिहास, संस्कृति, धर्मग्रन्थों महापुरुषों आदि को विकृत, कलंकित पतित एवं छेड़खानी करने वाली संसार में जाति है तो वह हिन्दू है। जिसने अपने इतिहास पूर्वजों महापुरुषों के सत्य यथार्थ स्वरूप को समझा जाना, माना और अपनाया नहीं है। जैसा आज योगीराज भगवान श्रीकृष्ण का अश्लील, भोगी–विलासी, लम्पट, पनघट पर गोपिकाओं को छेड़ने वाला आदि दिखाया, सुनाया पढ़ाया तथा बताया जा रहा है। वैसा सच्चे अर्थ में उनका प्रामाणिक जीवन चरित्र नहीं था। उन्हें चोरजार शिरोमणि, माखन चोर आदि कहकर लांछन लगाये गये। मीडिया श्रीकृष्ण के नाम पर अश्लीलता, श्रृंगार, वासना, कामुकता, ग्लैमर अन्ध विश्वास, पाखण्ड आदि दिखा सुना और फैला रहा है। आज की पीढ़ी इन्हीं बातों को सच व ऐतिहासिक मान रही है। कोई रोकने, टोकने व कहने वाला नहीं है। एक आर्य समाज है जो सत्य को सत्य और गलत को गलत कहने वाला था, वह आज स्वयं अपने में उलझा पड़ा है। उसकी आवाज में वह तीक्ष्णता और पैनापन नहीं रहा। इसीलिए तेजी से ढोंग पाखण्ड, अन्धश्रद्धा, अन्धविश्वास, गुरुडम आदि फैल रहा है। महापुरुषों की परम्परा में किसी को योगीराज

की उपाधि, सम्मान, पहचान एवं पूज्यभाव मिला है तो वे श्रीकृष्ण हैं। वास्तव में श्रीकृष्ण का गुण, कर्म स्वभाव, आचरण जीवन दर्शन, चरित्र ऐसा नहीं था जो आज मिलता है। असली उनका चरित्र महाभारत में है जहां वे सर्वमान्य, सर्वपूज्य योगी, उपदेष्टा, मार्गदर्शक विश्वबन्धु, नीतिनिपुण, सत्य न्याय, धर्म के पक्षधर के रूप में दिखाई देते हैं। जब वर्तमान में प्रदर्शित जीवन चरित्र की तुलना महाभारत के श्रीकृष्ण से करते हैं तो रोना आता है। गीता जैसा अमूल्य ग्रन्थ महाभारत का ही अंग है। विश्व में धर्म व आध्यात्म के क्षेत्र में भारत को गीता से मिला सम्मान और पहचान बनी। गीता में श्रीकृष्ण ने जो जीवन जगत के लिए अमर उपदेश व संदेश दिये हैं वे युगों–युगों तक जीवित जागृत रहेंगे। गीता भागने का नहीं जागने की दृष्टि विचार एवं चिन्तन देती है। जीवन जगत में रहते हुए, निष्काम कर्म करते हुए जीवन के चरम लक्ष्य मोक्ष तक पहुंचने का गीता दिव्य संदेश देती है। गीता में ज्ञान, विवेक, वैराग्यपूर्ण श्रीकृष्ण योगी के रूप में सामने आते हैं। जैसे कोई हिमालय की चोटी पर खड़ा योगी आत्मा–परमात्मा, जीवन मृत्यु, भोग, योग, ज्ञान, कर्म, भक्ति आदि का चिन्तन प्रेरणा व संदेश दे रहा हो। तत्वज्ञ पाठकगण सोचें विचारें और समझें – कहां गीता के श्रीकृष्ण और पुराणों कथाओं कल्पित कहानियों के श्रीकृष्ण हैं? हमने उन्हें क्या से क्या बना दिया है। अमृत से निकालकर उन्हें कीचड़ में डाल रहे हैं। महाभारत और गीता के श्रीकृष्ण को भूलकर, छोड़कर आज समाज पुराणों व रसीली कथाओं के श्रीकृष्ण के चरित्र को पकड़ रहे हैं। संसार का दुर्भाग्य है कि श्रीकृष्ण के सत्य स्वरूप जीवन दर्शन के साथ अन्याय व धोखा हो रहा है। पुराणों में श्रीकृष्ण को युवा व वृद्ध होने ही नहीं दिया। बाल लीलाओं में उनका सम्पूर्ण जीवन अंकित व चित्रित होकर रह गया। जिन्होंने कभी भीख नहीं मांगी थी आज हम उनके चित्र व नाम पर धन बटोर व भीख मांग रहे हैं। किसी विदेशी चिन्तक ने श्रीकृष्ण के वर्तमान स्वरूप को देखकर टिप्पणी की थी यदि भारत ने सबसे अधिक अन्याय अत्याचार किया है तो वह अपने महापुरुषों के चरित्र के साथ किया है। उनके असली स्वरूप को भुलाकर विकृत कलंकित रूप में उन्हें दिखा रहे हैं। इतिहास हमें कभी माफ नहीं करेगा। ऋषि दयानन्द से बढ़कर सत्य वक्ता और प्रामाणिक कौन हो सकता है। उन्होंने श्रीकृष्ण के उज्ज्वल व प्रेरक चरित्र की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। **देखो! श्रीकृष्ण का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण–कर्म–स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है। श्रीकृष्ण ने जन्म से लेकर मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा कहीं भी नहीं लिखा है।**

महाभारत में राधा का कहीं नाम नहीं आता है। किन्तु आज राधा के नाम बिना श्रीकृष्ण की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। राधा यशोदा के भाई रायण की पत्नी थी। पुराणों, लोककथाओं, कहानियों, साहित्य आदि में श्रीकृष्ण के चरित्र को कलंकित व विकृत तथा बदनाम करने के लिए राधा का नाम जोड़ा गया। इतिहास में मिलावट की गई। लोगों को नैतिक, धार्मिक जीवन मूल्यों से पथभ्रष्ट करने के लिए श्रीकृष्ण और राधा के नाम पर अश्लील व श्रृंगारिक कूड़ा–करकट इकट्ठा कर लिया गया। जो आज फल–फूल रहा है। श्रीकृष्ण पत्नीव्रत थे उनकी धर्म पत्नी रुक्मिणी थी। श्रीकृष्ण के जीवन वृत्त में तो रुक्मिणी का नाम आता है। मगर व्यावहारिक रूप में मन्दिरों, लीलाओं, कथाओं, झांकियों आदि में रुक्मिणी को श्रीकृष्ण के साथ नहीं दिखाया जाता है। यह रुक्मिणी के साथ पाप और अन्याय है। सच्चा इतिहास इसे कभी माफ नहीं करेगा। श्रीकृष्ण जैसे एक पत्नीव्रती ज्ञानी, संयमी मर्यादा पालक महापुरुष व्यभिचारी एवं परस्त्रीगामी कैसे हो सकते हैं। श्रीकृष्ण संसार के अद्वितीय महापुरुष थे।

आर्य समाज का उदय सत्य के प्रचार–प्रसार और वैदिक धर्म के पुनरुद्धार के लिए हुआ। महापुरुषों के उज्ज्वल प्रेरक चारित्रिक गरिमा की रक्षा का सदा पक्षधर रहा है। उसका नारा था जागते रहो। जागते रहो। स्वयं जागो और दूसरों को जगाओ। आज दुनिया जिस रूप में श्रीकृष्ण को मानती, जानती व समझती है, उस विकृत, कलंकित श्रीकृष्ण के स्वरूप को आर्य समाज नहीं मानता है। आर्य समाज उन्हें योगीराज महापुरुष के रूप में सम्मानित एवं प्रतिष्ठित करता है। वे दिव्य गुणों से युक्त महापुरुष थे। उन्हें अवतारी ईश्वर नहीं मानता है। परमात्मा एक है। अनेक नहीं, वह कण–कण में सर्वत्र विद्यमान है। वह व्यक्ति नहीं शक्ति हैं। वह सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान व सर्वान्तरयामी है। वह जन्म मृत्यु से परे है। गीता में स्वयं श्रीकृष्ण ने कहा है –

ईश्वरः सर्वभूतानां हृददेशेऽर्जुन तिष्ठति।

वह परमेश्वर सर्व प्राणियों के हृदय में सदा निवास करता है। यदि हम श्रीकृष्ण को महापुरुष के रूप में जानें और मानेंगे तो उनसे जीवन जगत के लिए हम बहुत कुछ सीख, प्रेरणा व शिक्षा ले सकते हैं। वे हमारे रोल मॉडल बन सकते हैं। श्रीकृष्ण का सम्पूर्ण जीवन दर्शन, निराश, हताश, उदास, परेशान, अशान्त किं कर्त्तव्यविमूढ़ व्यक्ति को सदा हिम्मत, सहारा, आशा और आगे बढ़ने की रोशनी देता है। अधिकांश लोगों को यह भ्रांति अज्ञान और भूल है कि आर्य समाज किसी देवी देवता महापुरुष आदि को नहीं मानता है। सच ये है कि जितनी सच्चाई, ईमानदारी, श्रद्धा भक्ति से महापुरुषों के सत्यस्वरूप को आर्य समाज मानता, जानता और बताता है, उतना और कोई नहीं क्योंकि आर्य विचारधारा का आधार बुद्धि, तर्क व प्रमाण है। आर्य समाज कहता है चित्र का हम सम्मान करते हैं और चरित्र का अनुकरण करते हैं।

प्रतिवर्ष श्रीकृष्ण के जन्म को जन्माष्टमी के रूप में बड़ी धूमधाम से कृष्णलीला, रासलीला, झांकियों और तरह–तरह के कार्यक्रमों के रूप में मनाया जाता है। ग्लैमरस रास–रंग, रसीले श्रृंगारिक कार्यक्रम होते हैं। करोड़ों का बजट चकाचौंध में चला जाता है। श्रीकृष्ण के योगदान महत्त्व, जीवनदर्शन, गीता ज्ञान, शिक्षाओं, उपदेशों आदि का चिन्तन–मनन होना चाहिए वह गौण होकर ओझल हो जाता है। मूल छूट जाता है। ऐसे महत्त्वपूर्ण एवं प्रेरक अवसरों पर महापुरुषों द्वारा दिये गये उपदेशों, संदेशों, विचारों व ग्रन्थों पर चिन्तन–मनन व आचरण की शिक्षा लेनी चाहिए। जो महापुरुषों के जीवन चरित्रों के साथ काल्पनिक, चमत्कारिक और अतिशंयोक्तिपूर्ण बातें जोड़ दी गई हैं। जिन्हें लोग सत्य बचन महाराज और सिर नीचा करके स्वीकार कर रहे हैं। उन व्यर्थ की मनगढ़न्त बातों पर परस्पर चर्चा करके भ्रांतियों और अज्ञान को हटाना चाहिए। तभी महापुरुषों को स्मरण करने तथा जन्मोत्सव मनाने की सार्थकता, उपयोगिता और व्यावहारिकता है। उस महामानव इतिहास पुरुष योगेश्वर श्रीकृष्ण की स्मृति को कोटि–कोटि प्रणाम।

– बी. जे.–29 पूर्वी, शालीमारबाग, दिल्ली–88

स्वतन्त्रता दिवस पर विशेष

राष्ट्र चेतना का सिंहनाद

न दैन्यं न पलायनम्

– आचार्य राजेन्द्र शर्मा

देश के उत्थान के लिए आवश्यक है कि देशवासियों में तप और दीक्षा की भावना विद्यमान हो। राष्ट्र–चेतना के जागरण में उसमें शक्ति सम्पन्नता लाने में और ओजस्विता भरने के लिए देशवासियों में तप और दीक्षा लानी ही होगी। तप और दीक्षा से सम्पन्न जब हमारे राष्ट्र नेता होंगे, सांसद होंगे, विधायक होंगे और प्रत्येक देश का नागरिक होगा तभी देश का कल्याण होगा इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति को प्रयासशील होना पड़ेगा। एक संकल्प लेना होगा कि हमें देश में कल्याणकारी परिवर्तन लाना है।

5 मई, 1857 को अमर शहीद मंगल पाण्डे के बलिदान से लेकर 30 जनवरी, 1948 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के अमर बलिदान तक असंख्य देशभक्तों ने अपने रक्त की ऊष्मा से राष्ट्र को अनुप्राणित किया है जिसके परिणामस्वरूप दास्ता के अन्धकार को विदीर्ण कर 15 अगस्त, 1947 को भारतीय स्वतंत्रता का उदय हुआ। एक हजार वर्ष की दारूण दासता ने राष्ट्रीय गौरव को धूल–धूसरित कर दिया था। राष्ट्र ने करवट ली और नये स्वप्न, नई उमंगे और नया उत्साह जाग उठा।

देश को स्वतंत्र हुए 70 वर्ष व्यतीत हो गए। देश के मजूदरों ने देश के किसानों ने, देश के सर्वहारा वर्ग ने जो आशाएं संजोई थी, सब वैसी की वैसी रह गई। सामान्य जन हताशा और अवसाद से ग्रस्त है। भय और आतंक का वातावरण चारों ओर दिखाई दे रहा है। प्रतिदिन बम फूट रहे हैं, बरबरतापूर्ण नरसंहार किया जा रहा है। देश के प्रायः प्रत्येक भाग में विघटनकारी प्रवृत्तियाँ पनप रही हैं। उपभोक्तावादी संस्कृति ने राष्ट्रीय चेतना को दबा लिया है। पाश्चात्य भोगवादी प्रवृत्तियाँ राष्ट्र को खोखला कर रही है। देश का प्रबुद्ध वर्ग यह सब देखकर विचलित हो रहा है परन्तु हताशा और निराशा उसको घेरे हुए है।

निःसंदेह देश ने भौतिक प्रगति की है। उपग्रह आकाश में विचरण कर रहे हैं। खाद्यान्न में हम आत्म निर्भर हुए हैं। वस्त्र आदि का निर्यात भी कर रहे हैं। विद्यालयों के जाल बिछ गये हैं। नगर और महानगर बन गए हैं। वाणिज्य, उद्योग, व्यापार, कृषि आदि क्षेत्रों में देश ने प्रगति की है। परन्तु यह समस्त प्रगति हृदय को उल्लासित नहीं कर पाती है। मन में सन्तोष नहीं पैदा कर पाती है। खोखला पन, चारों ओर खोखला पन ही अनुभव होता है। जो भी प्रगति राष्ट्र ने की है इससे आम जनता का भला नहीं हुआ। कुछ परिवारों तक राष्ट्रीय लाभ सिमट कर रह गया है। भ्रष्टाचार, नैतिकता का ह्रास, त्याग और बलिदान की भावनाओं के अभाव ने देश को खोखला बना दिया है। देश के नेता, सांसद, विधायक, अधिकारी सबके सब लोभ लाभ में फंसे हैं। भारत माँ का जयघोष तो करते हैं परन्तु मात्र वाणी से और माल के लिए समस्त प्रयास चलते हैं। प्रतिदिन सामान की चोरी, घटिया माल का लगाना, किसी भी तरह पैसा बनाना हमारा ध्येय रह गया। ऐसी अवस्था में यदि देश की तेजस्विता समाप्त हो गई तो आश्चर्य ही क्या?

देशवासियों में हमें स्वतंत्रता के पूर्व की भावनाओं को भरना होगा। राष्ट्र को झकझोरना होगा और उसमें देशभक्ति को लाना होगा। राष्ट्र बना बनाया नहीं मिलता है। राष्ट्र बनाना पड़ता है। राष्ट्र–राष्ट्र कब बनता है और उसमें बल तथा ओज कैसे आता है वेद माता बताती है :–

भद्रं इच्छन्त ऋषयः स्वर्विदरतपो
दीक्षामुपनिषेदुरग्रे।
ततो राष्ट्रं बलं ओजश्च जातम्....।।

देश के उत्थान के लिए आवश्यक है कि देशवासियों में तप और दीक्षा की भावना विद्यमान हो। तप का अर्थ है 'तपो द्वन्द्व सहिष्णुत्वम्'। लक्ष्य की पूर्ति में हानि–लाभ, सुख–दुख की चिन्ता न करते हुए धैर्य पूर्वक बढ़ते जाना। यक्ष युधिष्ठिर संवाद में यक्ष के प्रश्न करने पर युधिष्ठिर ने कहा – तपः स्वकर्मवर्तित्वम्। अपने कर्त्तव्य का एक निष्ठ होकर पालन करना तप है। राजनीति के कुशल खिलाड़ी आचार्य चाणक्य ने कहा – 'तपः सारः इन्द्रिय निग्रहः।। तप का सार इन्द्रिय निग्रह है। दीक्षा नाम है कटिबद्धता का। राष्ट्र चेतना के जागरण में, उसमें शक्ति सम्पन्नता लाने में और ओजस्विता भरने के लिए देशवासियों में तप और दीक्षा लानी ही होगी। इन्हीं के अभाव में आज देश रसातल को जा रहा है। तप और दीक्षा से सम्पन्न जब हमारे राष्ट्र नेता होंगे, सांसद होंगे, विधायक होंगे और प्रत्येक देश का नागरिक होगा तभी देश का कायाकल्प हो पायेगा। इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति को प्रयासशील होना पड़ेगा। एक संकल्प लेना होगा कि हमें देश में कल्याणकारी परिवर्तन लाना है। देश की दुरवस्था को देखकर केवल हम मौखिक आलोचना ही नहीं करेंगे अपितु जन–चेतना को जगाकर हम संघर्ष करेंगे। संघर्ष के माध्यम से हम राष्ट्र को खोखला करने वाले भीड़ तन्त्र, जाति तन्त्र कुनबा तन्त्र, परिवार तन्त्र, क्षेत्र तन्त्र, सम्प्रदाय तन्त्र, लोभ और लिप्सा तन्त्र को कुचल कर विनष्ट कर सच्चे लोकतंत्र की स्थापना करेंगे, नैतिकता की स्थापना करेंगे और मानवीय मूल्यों पर आधारित निर्दोष राजनीति को बनायेंगे।

महान् संकल्प है। कठिनाइयाँ आयेंगी, विघ्न बाधाएँ पड़ेगी, प्राणों का संकट भी उपस्थित होगा परन्तु जाग्रत जन–चेतना वह आंधी होती है जिसके समक्ष सब तिनके के समान उड़ जाते हैं। सुरक्षा, सुव्यवस्था कल्याणकारी राज्य देने में असफल देश के नेताओं से कहना होगा कि तुम हटो और तुमको हटना होगा। आज हमारी भारत माता का अंग अंग कोढ़ से ग्रस्त है। कुरूप और बेडौल हो रही है। हमें इसका कायाकल्प करना है। उन सब सत्ता लोभियों को भगाना है। जिन्होंने अपनी माता के साथ भयंकर विश्वासघात किया है। कार्य कठिन है परन्तु असाध्य नहीं। इण्डोनेशिया का उदाहरण हमारे समक्ष है। दशाब्दियों का शासक गद्दी छोड़कर भाग गया। जन–चेतना के जागरण की आवश्यकता है। नई क्रांति लाने की आवश्यकता है। आज प्रत्येक जन संकल्प ले, न दैन्यं न पलायनम् और कार्य वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्। करो–मरो की प्रबुद्ध भावनापूर्वक देश के कायाकल्प करने के लिए जुट जाना है। सफलता निश्चित है।

– अवकाश प्राप्त प्रधानाचार्य, आर्य समाज शकरपुर, दिल्ली–92

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

16 अगस्त बलिदान दिवस पर विशेष

कर्जन वायली से बदला लेने वाले
वीर शहीद मदनलाल ढींगरा

(क्रांतिकारी शहीद भगतसिंह द्वारा लिखित)

(अंग्रेजों की धारती पर ही अंग्रेजों के अत्याचारों का बदला लेने वाले इस साहसी क्रांतिकारी का यह जीवन परिचय 'किरती' समाचार पत्र, मार्च 1928 में क्रांतिकारी भगतसिंह ने 'विद्रोही' नाम से लिखा था। वहाँ से उद्धृत कर उसे यथावत् रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। - संपादक)

अब फिर यह बताने की जरूरत नहीं कि भारतवर्ष की आजादी के लिए जितनी कुर्बानी पंजाब प्रान्त ने की है, उतनी किसी और प्रान्त ने नहीं की। बीसवीं सदी के शुरू होने के साथ ही भारत में एक बार नई अशान्ति की लहर दौड़ गई, जिसका परिणाम स्वदेशी आन्दोलन की शक्ल में प्रकट हुआ। तब भी पंजाब ही बंगाल का साथ दे सका था। गुलामी की जंजीरें दिनों दिन जकड़ी देखकर जब दर्द शुरू हुआ तब बहुत से नौजवान अपने देशप्रेम में पागल हुए दिलों को केवल लेक्चरबाजी और प्रस्तावबाजी मात्र से सन्तोष न दे सके और कुछ दिल-जले लोगों ने युग पलट आन्दोलन चलाया। यह आन्दोलन उन देशप्रेमी युवकों को अपनी ओर खींचने में सफल हो गया और इन परवानों ने स्वतंत्रता देवी के चरणों में अपने जीवन तक बलिदान कर दिये और मुर्दा देश को फिर मृत्यु के प्रति निर्भयता दिखाकर पुराने बुजुर्गों की याद ताजा कर दी।

यह युग पलटने वाले या विद्रोही लोग कैसे विचित्र होते हैं, इसका कुछ वर्णन बंगाल के विद्रोही कवि नजरूल इस्लाम ने अपनी 'विद्रोही' कविता में किया है। मौत के हाथ में हाथ डालकर खेल करने वाले, गरीबों के सहायक, आजादी के रक्षक, गुलामी के दुश्मन, जालिमों, अत्याचारियों और मनमानी करने वाले शासकों के शत्रु इन विद्रोही वीरों के दिल का, मन का, स्वभाव का, इच्छा का बड़ा सुन्दर चित्र उन्होंने अपनी कविता में खींचा है। पहले ही वे कहते हैं। बोलो वीर चिर उन्नत मम शीर, शिर नेहरि आमारि, नत शिर ओई शिखर हिमाद्रीर।

यानी हे विद्रोही वीर! तुम एकदम यह कहते हो कि मैं कब से सिर उठाये खड़ा हूँ। मेरा ऊँचा सिर देखकर हिमालय ने भी अपना सिर शर्म के मारे झुका दिया।

आगे जाकर उसकी सख्ती और गरमी का वर्णन किया है कहीं वह मौत से (के साथ) नाच कर रहा है, कहीं वह संसार का एक ही बार सर्वनाश करने पर तुला हुआ है। वह बिजली की तरह चमकता है। वह संगीत की तरह मीठा है। विधवा, गुलाम, मजलूम, गरीब, भूखे और पीड़ित लोगों में बैठकर वह लगातार रोता रहता है। ऐसे विचित्र जीव की विचित्र महिमा का वर्णन करते हुए अन्त में विद्रोही के मुँह से कहलवाते हैं -

महा विद्रोही रणक्लान्त आमि शेई दिन हॅबो शान्त, जॅबे उत्पीड़ितेर क्रन्दन रोल आकाशे बाता से ध्वनिवे ना, अचारीर खड्ग कृपाण भीम रणभूमि रणिवे ना, विद्रोही रणक्लान्त आमि शेई दिन हॅवो शान्त!

अर्थात् मैं विद्रोही अब लड़ाई से थक गया हूँ और मैं भी उसी दिन शान्त हो जाऊँगा जिस दिन किसी दुःखी की आह या चीत्कार आकाश में जाकर आग न लगा सकेगी, यानी कोई दुःखी न रहेगा, और अब जालिमों, अत्याचारियों की भयानक तलवार मैदान में चलनी बन्द हो जायेगी, यानी बाकी ही न रहेंगी तब और तभी मैं शान्त हो सकूँगा और हो भी जाऊँगा।

ऐसे विचित्र विद्रोही जीव जो पूरे विश्व से टकरा जाते हैं और स्वयं को जलती आग में झोंक देते हैं, अपना ऐशो-आराम सब भूल जाते हैं और दुनिया की सुन्दरता, शृंगार में कुछ वृद्धि कर देते हैं और उनके बलिदानों से ही विश्व में कुछ प्रगति होती है। ऐसे ही वीर हर देश में हर समय होते हैं। हिन्दुस्तान में भी यही पूजनीय देवता जन्म लेते रहे हैं, ले रहे हैं और लेते रहेंगे। हिन्दुस्तान में से भी पंजाब ने ऐसे रत्न अधिक दिये हैं, बीसवीं शती के ऐसे ही सबसे पहले शहीद श्री मदनलाल ढींगरा हैं।

वे कोई लीडर तो थे नहीं कि उनके जीते जी उनका जीवन चरित्र छपकर दो-दो आने में बिक जाता। वे अवतार भी नहीं थे कि ज्योतिष से बताकर शोर मचा दिया जाता कि हम तो पहले ही समझ गये थे कि वे बहुत बड़े आदमी थे। उनकी किन्हीं ऐसी बातों का भी हमें पता नहीं कि हम लिख सकें कि 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात'। वह गरीब और एक बदकिस्मत विद्रोही था। उसके पिता ने उसे अपना पुत्र मानने से इन्कार कर दिया था। देशभक्त और खुशामदी सभी अखबारों में और उस समय के गर्म नेता विपिनचन्द्र पाल तक ने उन्हें कोस-कोसकर गालियाँ दी तो फिर बताओ इन हालात में आज बीस साल बाद उनके बारे में तथ्यों को फिर से इकट्ठा करने की कोशिश में किसी को कितनी सफलता मिल पायेगी? इन कठिनाइयों में हम आज उनका जीवन वृत्तान्त लिखने बैठ गये हैं। धीरे-धीरे हम लोग, उनका नाम भी न भूल जायें, यही सोचकर आज उनके बारे में जैसे भी तथ्य मिल सकते हैं, यह वृत्तान्त पाठकों के सामने रख रहे हैं।

आप शायद अमृतसर के रहने वाले थे। घर से अच्छे थे। बी. ए. पास कर पढ़ने के लिए इंग्लैंड चले गये। कहा जाता है कि वहाँ आप कुछ ऐय्याशी में फंस गये। यह बात यकीन से नहीं कही जा सकती, लेकिन यह कोई अनहोनी बात भी नहीं है। उनका मन बड़ा रसिक व भावुक था, इसबात का प्रमाण भी मिलता है इंग्लैंड के खुफिया विभाग के प्रसिद्ध जासूस श्री ई. टी. बुडहाल ने यूनियन जैक नामक साप्ताहिक अखबार में अपनी डायरी छापी थी। मार्च 1925 के अंक में उन्होंने श्री मदनलाल ढींगरा का हाल लिखा है। यह जासूस उनके पीछे लगाया गया था। वह लिखता है - ढींगरा एक असाधारण व्यक्ति था।ढींगरा का फूलों के प्रति जबरदस्त लगाव था। आगे जाकर उन्होंने लिखा है कि वे बाग के किसी सुन्दर कोने में जाकर बैठ जाते थे और घंटों तक फूलों को एक कवि की तरह मस्त होकर निहारते रहते और कभी उनकी आँखों से बड़ी तेज चमक कौंध उठती थी। उसी चमक को देखकर ई. टी. बुडहाल उस्ताद सिकलाहिन आगे लिखता है - उस व्यक्ति पर आँख रखनी चाहिए। किसी न किसी दिन वह कुछ धमाका करेगा, खैर। बात कर रहे थे कि वे शायद ऐय्याशी में फँस गये। उस कहानी के आगे यों है कि

फिर स्वदेशी आन्दोलन का असर इंग्लैंड तक भी पहुँचा और जाते ही श्री सावरकर ने इण्डियन हाऊस नामक सभा खोल दी। मदनलाल भी उसके सदस्य बने।

उधर हिन्दुस्तान में खुले आन्दोलन को दबाने के कारण युग पलट लोगों ने खुफिया सोसाइटियाँ स्थापित कर लीं। यहाँ तक कि 1908 में अलीपुर की साजिश का मुकदमा बन गया। श्री कन्हाई और श्री सतेन्द्रनाथ को फाँसी मिल गई। धीरेन्द्र और उल्लासकर दत्त को भी उसी समय फाँसी की सज़ा सुनाई गई थी, ये खबरें इंग्लैंड में भी पहुँचीं और इन गरम नौजवानों में आग लग गई। कहते हैं कि एक दिन रात को श्री सावरकर और मदनलाल ढींगरा बहुत देर तक मशविरा करते रहे। अपनी जान तक दे देने की हिम्मत दिखाने की परीक्षा में मदनलाल को जमीन पर हाथ रखने के लिए कहकर सावरकार ने हाथ पर सुआ गाड़ दिया, लेकिन पंजाबी वीर ने आह तक न भरी। सुआ निकाल लिया गया। दोनों की आँखों में आँसू भर आये। दोनों एक-दूसरे के गले लग गये। आहा, वह समय कैसा सुन्दर था। वह अश्रु कितने अमूल्य व अलभ्य थे। वह मिलाप कितना सुन्दर, कितना महिमामय था। हम दुनियादार क्या जानें, मौत के विचार तक से डरने वाले हम कायर लोग क्या जानें कि देश की खातिर कौम के लिए प्राण देने वाले वे लोग कितने ऊँचे, कितने पवित्र और कितने पूजनीय होते हैं।

अगले दिन से ढींगरा फिर इंडियन हाऊस, सावरकर वाली सभा में नहीं गये और भारतीय विद्यार्थियों और विशेष खुफिया पुलिस का प्रबन्ध करने वाले और उनकी छोटी-मोटी आजादी को कुचलने वाले सर कर्जन वायली जो कि सेक्रेटरी आफ स्टेट फार इंडिया के एड. डी. कांप थे, द्वारा चलाई हिन्दुस्तानी विद्यार्थियों की सभा में जा शामिल हुए। यह देखकर इंडियन हाऊस वाले लड़कों को बड़ा जोश आया और उन्होंने उन्हें देशघातक, देशद्रोही तक कहना शुरू कर दिया, लेकिन उनका गुस्सा भी तो सावरकर ने यह कहकर शान्त किया कि आखिर उन्होंने हमारी सभा को चलाने के लिए भी तो सर तोड़ प्रयत्न किया था और उनकी मेहनत के फलस्वरूप ही हमारी सभा चल रही है, इसलिए हमें उनका धन्यवाद करना चाहिए। खैर। कुछ दिन तो चुपचाप गुजर गये।

1 जुलाई, 1909 को इम्पीरियल इंस्टीट्यूट के जहाँगीर हाल में एक बैठक थी। सर कर्जन वायली भी वहाँ गये हुए थे। वे दो और लोगों से बातें कर रहे थे कि अचानक ढींगरा ने पिस्तौल निकालकर उनके मुँह की ओर तान दी। कर्जन साहब की डर के मारे चीख निकल गई, लेकिन कोई इन्तजाम होने से पहले ही मदनलाल ने दो गोलियाँ उनके सीने में मारकर उन्हें सदा की नींद सुला दिया। फिर कुछ संघर्ष के बाद वे पकड़े गये दुनिया भर में सनसनी मच गई। सब लोग उन्हें जी भरकर गालियाँ देने लगे। उनके पिता ने पंजाब से तार भेजकर कहा कि ऐसे बागी, विद्रोही और हत्यारे को मैं अपना पुत्र मानने से इन्कार करता हूँ। भारतवासियों ने बड़ी बैठकें की। बड़े-बड़े भाषण हुए, बड़े-बड़े प्रस्ताव पास हुए। सब उनकी निन्दा में, पर उस समय एक वीर सावरकर थे, जिन्होंने खुल्लमखुल्ला उनका पक्ष लिया। पहले तो उनके खिलाफ प्रस्ताव न पास होने देने के लिए यह बहाना पेश किया कि अभी तक उन पर मुकदमा चल रहा है और हम उन्हें दोषी नहीं कह सकते। आखिर में जब इस प्रस्ताव पर वोट लेने लगे तो सभा के अध्यक्ष श्री विपिनचन्द्र पाल यह कह ही रहे थे क्या यह सभी की सर्वसम्मति से पास समझा जाये, तो सावरकर साहब उठ खड़े हुए और आपने व्याख्यान शुरू कर दिया। इतने में ही एक अंग्रेज ने इनके मुँह पर घूँसा मार दिया और कहा - "देखो अंग्रेजी घूँसा कैसे ठिकाने पर पड़ता है।" अभी वह कह ही रहा था कि (एक) हिन्दुस्तानी नौजवान ने उस अंग्रेज के सिर पर एक लाठी जड़ दी और कहा - "देखा यारों हिन्दुस्तानी का डन्डा कैसे ठिकाने पर पड़ता है।" शोर मच गया। बैठक बीच में छूट गयी। प्रस्ताव भी ऐसे ही रह गया, खैर।

मुकदमा चल रहा था। मदनलाल बड़े खुश थे। बड़े शान्त थे। सामने दर मर मौत खड़ी देखकर भी वे मुस्करा रहे थे। वह निर्भय थे। आहा! वे वीर विद्रोही थे। आपने अन्त में जो बयान दिया वह आपकी नेक दिली, आपकी देशभक्ति और योग्यता का बड़ा भारी सबूत है। हम उनके ही शब्दों में देते हैं। यह 12 अगस्त के डेली न्यूज में छपा था - "मैं मानता हूँ कि मैंने उस दिन अंग्रेज का खून किया और कहता हूँ कि यह उन निर्दयता भरी सजाओं का मामूली सा बदला है जो कि हिन्दुस्तानी देशभक्त नौजवानों को फाँसी और कालेपानी की दी गई है। मैंने इस काम में अपने जमीर के सिवा किसी और की सलाह नहीं ली। अपने फर्ज के सिवाय किसी से साजिश नहीं की।

मेरा यह विश्वास है कि एक राष्ट्र जिसे विदेशी लोगों ने बन्दूकों से दबाया हो, वह हमेशा युद्ध की स्थिति में होता है और चूँकि हथियार छीनकर खुली लड़ाई असम्भव बना दी जाती है, मैंने छिपकर बिना बताये हमला किया है। क्योंकि हमें बन्दूकें रखने से मना किया जाता है, इसीलिए मैंने पिस्तौल खींच लिया और चला दिया।

मैं एक हिन्दू के रूप में समझता हूँ कि मेरे देश के साथ किया गया अन्याय ईश्वर का अपमान है, क्योंकि देश की पूजा श्री रामचन्द्र जी की पूजा है और देश की सेवा श्री कृष्ण जी की सेवा है। एक गरीब और मूर्ख, मेरे जैसे नौजवान के पास अपनी माता की सेवा में भेंट करने के लिए अपने रक्त के सिवाय और क्या हो सकता है? सो मैंने अपना रक्त माता के चरणों पर चढ़ाया है। इस समय यदि हिन्दुस्तान को किसी सबक की जरूरत है तो यह कि मरना कैसे चाहिए और इसे सिखाने का तरीका है कि हम खुद मर कर दिखायें। इसीलिए मैं मर रहा हूँ इसीलिए मुबारक हो शहीदाना मौत। यह लड़ाई तब तक जारी रहेगी जब तक हिन्दुस्तान और अंग्रेज दो राष्ट्र रहेंगे और इनका यह अस्वाभाविक गठबन्धन बना रहेगा। मेरी ईश्वर से आगे यही प्रार्थना है कि मैं फिर इसी माँ की गोद सें जन्म लूँ और जब तक वह स्वतन्त्र न हो जाये और मानव समाज की पूर्ण सेवा और उन्नति के योग्य न बन जाऊँ, मैं यहीं जन्मता रहूँ और मरता रहूँ। बन्दे मातरम्।

16 अगस्त, 1910 का दिन भी इतिहास में याद रहेगा। उस दिन इंग्लैंड में हिन्दुस्तानी युग पलट पार्टी की आवाज गुंजाने वाला ढींगरा वीर अर्जुन मतवाली चाल चलता हुआ तख्ते पर जा चढ़ा था, श्रीमती एग्निस स्मेडले एक जगह इस घटना का जिक्र करती हुई लिखती है - आहा! सहारा देकर ले जाने वाले व्यक्तियों के हाथ पीछे झटककर वह कहने लगा - मैं मौत से नहीं डरता।' आहा! धन्य है मृत्युंजय! माँ से इतना प्यार! फाँसी के तख्ते पर खड़े हुए से पूछा जाता है - कुछ कहना चाहते हो? तो उत्तर मिलता है, 'वन्देमातरम्! माँ! भारत माँ! तुम्हें नमस्कार! वह वीर फाँसी पर लटक गया और हिन्दुस्तानियों को उनकी दाह क्रिया आदि कराने की इजाजत नहीं दी गई। धन्य था वह वीर! धन्य है उसकी याद! मुर्दा देश के अमूल्य हीरे को बारबार नमस्कार।

सभा कर्मचारी श्री ललन राय के पूज्य पिता श्री विक्रम राय जी का देहावसान

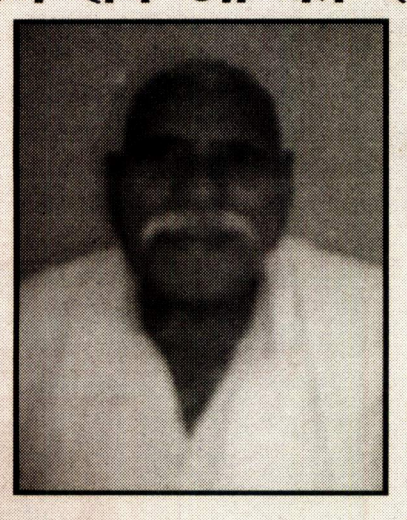

सार्वदेशिक सभा कार्यालय के एकाउंटेण्ट श्री ललन राय जी पूज्य पिता श्री विक्रम राय जी का दिनांक 4 अगस्त, 2017 को निधन हो गया। वे लगभग 84 वर्ष के थे। उन्होंने अपना जीवन पुलिस सेवा में बड़े मनोयोग से व्यतीत किया। अवकाश प्राप्ति के बाद वे आर्य समाज के कार्यों में अपना समय व्यतीत कर रहे थे। पिछले कुछ समय से वे अस्वस्थ चल रहे थे तथा 4 अगस्त को अर्द्धरात्रि को लगभग 2 बजे वे इस नश्वर देह को छोड़कर चले गये। वे अपने पीछे पौत्र–पौत्रियों से भरपूर परिवार छोड़ गये हैं। उनके परिवार में पत्नी तथा तीन पुत्र और एक पुत्री (सभी विवाहित) सुख–शांति से अपना जीवन यापन कर रहे हैं।

श्री विक्रम राय जी की स्मृति में उनके निवास स्थान ग्राम–खनगांव, जिला–भोजपुर, आरा, बिहार में 17 अगस्त, 2017 को विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया है। इसी अवसर पर आवश्यक रस्में भी पूर्ण की जायेंगी। सार्वदेशिक सभा परिवार श्री ललन राय जी के इस असह्य कष्ट में सहभागी है तथा परमपिता परमात्मा से पारिवारिक जनों को धैर्य तथा दिवंगत की सद्गति की प्रार्थना करता है।

पुण्य तिथि पर किया रक्तदान एवं वृक्षारोपण

रक्तदान से आध्यात्मिक उन्नति होकर अहिंसा भाव प्रबल होते हैं – यशपाल 'यश'

जयपुर, स्व सेठ लक्ष्मी नारायण स्मृति संस्थान जयपुर द्वारा स्व लक्ष्मी नारायण जीरामपुरा हिण्डोन बालो की 18वीं पुण्य तिथि पर रजत पथ मुख्य मार्ग स्थित. महाराजा सूरजमल पार्क मे पौधारोपण हुआ। संस्थान अध्यक्ष डा प्रमोद पाल के अनुसार स्थानीय कालोनीवासियों, परिजनो, संस्थान संरक्षक यशपाल "यश" दिनेश वशिष्ठ एडवोकेट, भाजपा अध्यक्ष राजेन्द्र खण्डेलवाल, विकास समितियो के अध्यक्ष डा गुलशन खण्डपुर, मदन लाल खुराना, सीताराम शर्मा, मानव निर्माण एवं विश्व शान्ति संस्थान अध्यक्ष श्रीमति मधुरानी पबन आर्य, दीपाकर, वी.एस. गुप्ता, श्रीकृष्ण सेनी सहित अनेक महिला पुरुष बच्चे मौजूद रहे। अर्जुन, बड़, आम, गूलर, फाइकस, शहतूत, पलकन व शीशम के 21 पेड लगाये तथा 101 गिलोय नीम के वृक्षों पर लगाने की शुरुआत की।

32 यूनिट् रक्त एकत्रित हुआ।

रक्तदान शिविर संयोजक दीपांकर ने बताया कि मुहाना मंडी रामपुरा रोड केसर नगर चौराहे पर स्थित जी एल सेनी नर्सिंग कालेज मे आयोजित स्वैच्छिक रक्तदान शिविर मे 32 लोगो ने रक्तदान किया। इस अवसर पर यशपाल "यश" ने कहा कि रक्तदान से आध्यात्मिक उन्नति होकर अहिंसा भाव प्रवल होते हैं।

अदरक : भूख जगाए, कब्ज भगाए

अदरक एक मसाले के रूप में काम आने के अलावा और भी कई तरह से फायदेमंद है। तरह–तरह की बीमारियों, तकलीफों में आप अदरक से लाभ पा सकते हैं।

- अगर आपको भूख नहीं लगती तो अदरक कमाल का असर दिखायेगा। अदरक को बारीक काटकर उसमें थोड़ा सा नमक मिला लें और रोज एक बार लगातार एक सप्ताह तक थोड़ा–थोड़ा खाएं। आपका पेट भी साफ होगा और भूख भी लगेगी।
- कोल्ड, फ्लू जैसी बीमारियों में लाभप्रद होने के अलावा अदरक लूज मोशन और फूड पॉइजनिंग जैसी बीमारियों के लिए भी लाभप्रद है।
- अदरक का नियमित सेवन करने से पाचन शक्ति दुरुस्त रहती है।
- पीरियड के दौरान पेट में होने वाली ऐंठन में ब्राउन शुगर और अदरक की चाय पीने से आराम मिलता है।
- शुगर की शिकायत वाले व्यक्ति अगर नियमित तौर पर अदरक का सेवन करें तो किडनी के नुकसान की आशंका काफी कम हो जाती है।
- मिनेस्टा यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने पाया है कि अदरक कोलोरेक्टल कैंसर के खतरे को काफी हद तक कम करता है।
- प्रेग्नेंसी के समय होने वाली मॉर्निंग सिकनेस को दूर करने में अदरक वैसी ही प्रभावशाली है, जैसे विटामिन–बी–6 की गोली।
- यह लूज मोशन के दौरान होने वाले नोजिया में भी लाभप्रद है।
- अदरक एक बेहतरीन दर्दनाशक हैं खांसी जुकाम, बुखार और सिरदर्द में इसका सेवन करने से तुरन्त आराम मिलता है।
- हीटबर्न को दूर करने में यह बेहद फायदेमंद औषधि है। ऐसी स्थिति में इसे चाय के रूप में लेना ठीक रहता है।
- त्वचा को खूबसूरत और चमकदार बनाना चाहते हैं तो रोज सुबह–सुबह खाली पेट अदरक का एक छोटा टुकड़ा गुनगुने पानी के साथ खाएं। इससे आपकी त्वचा निखर उठेगी।
- कब्ज से परेशान हैं तो अजवाइन और नींबू के रस में थोड़ा नमक मिला लें। उसमें अदरक मिलाकर खाएं, काफी लाभ होगा।
- अदरक का पाउडर ओवेरियन कैंसर के इलाज में काम आता है। एक शोध में पाया गया है कि अदरक में उपलब्ध तत्त्व ओवेरियन कैंसर के सेल को खत्म करते हैं।

योगेश्वर कृष्ण

डॉ० सारस्वत मोहन, मनीषी

कृष्ण तो नाम है आकाश की ऊँचाई का।
कृष्ण इक नाम है मुँह बोलती सच्चाई का।
कृष्ण को दुष्ट कहा करते जो खुद दुष्ट हैं वो।
कृष्ण को भ्रष्ट कहा करते जो खुद भ्रष्ट हैं वो।
सच तो ये है कि मेरे देश की तकदीर था वो।
कृष्ण कुछ और नहीं सत्य की शमशीर था वो।
कौन कहता है भ्रष्ट रास रचाया करता?
कौन कहता है कि कपड़े वो उठाया करता?
कौन कहता है कि राधा को नचाया करता?
कौन कहता है कि माखन वो चुराया करता?
न्याय था नग्न हुआ उसके लिए चीर था वो।
कृष्ण कुछ और नहीं सत्य की शमशीर था वो।
सच कहो सत्य को आसन पे बिठाया किसने?
और अन्याय को मिट्टी में मिलाया किसने?
सच्चे हकदार को फिर हक था दिलाया किसने?
ज्ञान गीता का दुखी जग को सुनाया किसने?
सत्य कहते हैं सभी जीत की तदबीर था वो।
कृष्ण कुछ और नहीं सत्य की शमशीर था वो।
कौन था कर्म का सिद्धान्त बताने वाला?
कौन था गर्व को झट धूल चटाने वाला?
कौन था कंस के आसन को हिलाने वाला?
कौन था मुर्दा पड़ा धर्म जिलाने वाला?
जिसका सानी न कहीं एक अजब वीर था वो।
कृष्ण कुछ और नहीं न्याय की शमशीर था वो।
बांसुरी प्रेम की दुनिया को सुनाई किसने?
पाप के ढेर में थी आग लगाई किसने?
खण्डहर न्याय की फिर दुनिया बसाई किसने?
द्रौपदी लुटने लगी लाज बचाई किसने?
देवता योगी यती धर्म की तस्वीर था वो।
कृष्ण कुछ और नहीं न्याय की शमशीर था वो।
कृष्ण का जन्म था जंजीर तोड़ने के लिए।
कृष्ण का कर्म था हृदयों को जोड़ने के लिए।
कृष्ण के नीति नयन बंद नहीं होते थे।
कृष्ण मानस में सदा पुण्य बीज बोते थे।
चलके खाली न गया ऐसा गजब तीर था वो।
कृष्ण कुछ और नहीं सत्य की शमशीर था वो।

वैदिक सार्वदेशिक के सुधी पाठकों तथा एजेंटों की सेवा में

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्रिका का आजीवन सदस्यता शुल्क 2500/– रुपये तथा वार्षिक शुल्क 250/– रुपये है। जो महानुभाव एक साथ में 10 (दस) नये सदस्य बनाकर शुल्क राशि, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के कार्यालय में भेजेंगे, उन महानुभावों को ग्याहरवें सदस्य के रूप में "वैदिक सार्वदेशिक" साप्ताहिक पत्रिका निःशुल्क भेजी जायेगी। आर्य समाज के सिद्धान्तों मन्तव्यों के प्रचार–प्रसार तथा आर्य समाज की गतिविधियों को जन–जन तक पहुँचाने के लिए वैदिक सार्वदेशिक के अधिकाधिक ग्राहक बनाकर अपना सहयोग प्रदान करें।

– सम्पादक

POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-01 On 11–12 अगस्त, 2017
प्रकाशन की तिथि : 10 अगस्त, 2017
वैदिक सार्वदेशिक
10 से 16 अगस्त, 2017
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

प्रभु हमारे भीतर वैदिक सत्य को जाग्रत् कर दें

**अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि।
स इद् देवेषु गच्छति।।**

—ऋ० १/१/४

ऋषिः—मधुच्छन्दाः।। देवता—अग्निः।। छन्दः—गायत्री।।

विनय—हम कई शुभ अभिलाषाओं से कुछ यज्ञों को प्रारम्भ करते हैं और चाहते हैं कि यज्ञ सफल हो जाएँ, परन्तु हे देवों अग्निदेव! कोई भी यज्ञ तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक उस यज्ञ में तुम पूरी तरह न व्याप रहे हो, चूँकि जगत् में तुम्हारे अटल नियमों व तुम्हारी दिव्य शक्तियों के अर्थात् देवों के द्वारा ही सबकुछ सम्पन्न होता है। तुम्हारे बिना हमारा कोई यज्ञ कैसे सफल हो सकता है? और जिस यज्ञ में तुम व्याप्त हो वह यज्ञ अध्वर (ध्वर अर्थात् कुटिलता और हिंसा से रहित) तो अवश्य होना चाहिए, पर जब हम यज्ञ प्रारम्भ करते हैं, कोई शुभ कर्म करते हैं, किसी संघ–संघठन में लगते हैं, परोपकार का कार्य करने लगते हैं तो मोहवश तुम्हें भूल जाते हैं। उसकी जल्दी सफलता के लिए हिंसा और कुटिलता से भी काम लेने को उतारू हो जाते हैं। तभी तुम्हारा हाथ हमारे ऊपर से उठ जाता है। ऐसा यज्ञ तुम्हारे देवों को स्वीकृत नहीं होता, उन्हें नहीं पहुँचता— सफल नहीं होता। हे प्रभो! अब जब कभी हम निर्बलता के वश अपने यज्ञों में कुटिलता व हिंसा का प्रवेश करने लगें और तुझे भूल जाएँ तो हे प्रकाशक देव! हमारे अन्तरात्मा में एक बार इस वैदिक सत्य को जगा देना; हमारा अन्तरात्मा बोल उठे कि "हे अग्ने! जिस कुटिलता व हिंसा–रहित यज्ञ को तुम सब ओर से घेर लेते हो, व्याप लेते हो, केवल यही यज्ञ देवों में पहुँचता है, अर्थात् दिव्य फल लाता है—सफल होता है।' सचमुच तुम्हें भुलाकर, तुम्हें हटाकर यदि किसी संगठन–शक्ति द्वारा कुटिलता व हिंसा के ज़ोर पर कुछ करना चाहेंगे तो चाहे कितना घोर उद्योग करें पर हमें कभी सफलता न मिलेगी।

शब्दार्थ—**अग्ने**=हे परमात्मन्! **त्वम्**=तुम **यम्**=जिस **अध्वरं यज्ञम्**=कुटिलता तथा हिंसा से रहित यज्ञ को **विश्वतः परि भूः असि**=सब और से व्याप लेते हो **स इत्**=केवल वही यज्ञ **देवेषु गच्छति**=दिव्य फल लाता है।

साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सोशल मीडिया के माध्यम से
स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

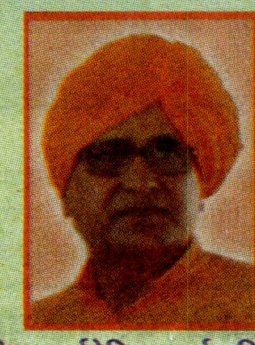

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

बेटी बचाओ अभियान द्वारा श्रावणी उपाकर्म व रक्षाबंधन पर्व मनाया गया

पिछले वर्ष रक्षाबंधन पर लगाए गए पौधों का जन्मदिन मनाया गया

टिटौली :– (रोहतक) आर्य समाज द्वारा संचालित बेटी बचाओ अभियान द्वारा आज जिले के गाँव टिटौली स्थित स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ, आश्रम में वैदिक पर्व श्रावणी उपाकर्म के अवसर पर यज्ञ किया गया। इस अवसर पर श्रावणी की विशेष आहुतियां प्रदान की गई। यज्ञ पर यज्ञोपवित भी परिवर्तित किये गए।

यज्ञ के उपरान्त रक्षाबंधन का त्यौहार भी मनाया गया।

बेटी बचाओ अभियान द्वारा पिछले वर्ष रक्षाबंधन के अवसर पर लगाये गए पौधों का पहला जन्मदिन भी मनाया गया। इस अवसर पर सभी पौधों की घास आदि हटा कर उनमे पानी व देशी खाद डाली गई।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या ने कहा कि श्रावणी उपाकर्म वैदिक संस्कृति का एक तरह से आधार पर्व है। इस दिन से विद्या आरम्भ की जाती है गुरुकुलों में नए ब्रह्मचारियों को यज्ञोपवित प्रदान किये जाते हैं पुरानों के परिवर्तित किये जाते हैं। वेद सहित अन्य वैदिक ग्रंथो का स्वाध्याय इस अवसर पर प्रारम्भ होता है।

बेटी बचाओ अभियान की संयोजक बहन प्रवेश आर्या ने आह्वान किया कि सभी बहनें जब अपने भाइयों को राखी बांधे तो उनसे एक संकल्प अवश्य लें। जिस तरह वो आपकी इज्जत व मान घर में करता है वैसी ही इज्जत व मान वो घर से बाहर जाने के बाद बाहर भी अन्य बहनों की करे। वो अन्यों की माँ, बहन, बेटी का वैसे ही सम्मान करे जैसा वो खुद की माँ, बहन व बेटी के लिए चाहता है। आज हर माँ अपने बेटे व बहन अपने भाई को सुसंस्कारित बनाने का संकल्प लेंगी तभी ये पर्व व त्यौहार मनाने सार्थक होंगे।

कम से कम 5 वर्ष तक मनाये एक पौधे का जन्मदिन

बहन पूनम आर्या ने कहा कि हमें पौधे लगाकर छोड़ने नहीं चाहिये। बल्कि उनकी लगातार परवरिश करके उन्हें बड़ा करना चाहिए। यह तभी संभव है जब हम अपने परिवार की तरह उनका ख्याल रखेंगे। जिस तरह परिवार में बच्चे का जन्मदिन चाव के साथ मनाया जाता है, उसी तरह कम से कम 5 वर्ष तक एक पौधे का जन्मदिन मनाया जाए। 5 वर्ष तक परवरिश के बाद पौधे अपने आप चल पड़ते हैं उसके बाद उन्हें ज्यादा देखभाल की जरूरत नही होती।

आज हमें पौधों की रक्षा का संकल्प भी लेना चाहिए क्योंकि ये हमारी रक्षा ऑक्सीजन देकर लगातार कर रहे हैं। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान दीक्षेन्द्र आर्य, महामंत्री ऋषिराज शास्त्री, उप मंत्री अजयपाल आर्य, अंतरंग सदस्य जितेंद्र आर्य, धर्मदेव, बेटी बचाओ अभियान की कार्यकर्त्ता शशि आर्या (एच.सी.एस.) राष्ट्रपति से सम्मानित व चाइना में योग करके लौटी सोनिया आर्या, इंदु आर्या, रीमा आर्या, राजकुमारी आर्या, शिखा आर्या, एकता आर्या, प्रीति आर्या,मीनू आर्या, मनीषा आर्या, सुमन आर्या, सुषमा आर्या, सुनीता आर्या, पूजा आर्या व पूनम आर्या महम, मधु आर्या, गायत्री आर्या, मंजू आर्या,मीनू,अन्नू राजवीर आदि उपस्थित रहे।

– प्रवेश आर्या, 9416630916

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।